

१४४ महाकाव्य लीपुत्रा

ASHA ARCHIVES

3500

२५८
॥ श्री गुरुदेवाय नमः ॥ नमस्तस्मै ॥ इति रघुवंश
मः ॥ ३ ॥ वलिः ॥ वलिः इव तात्या मम ॥ तद्य
नः ॥ शुद्धिकाया वः ॥ यत्र मगुत्र ॥ यत्रायत्र
त्र ॥ यत्र मखिग्रत्र ॥ वलिः ॥ विदुः ॥ त्रै नमः
नाथयः ॥ त्रै नमः सिद्धिनाथयः ॥ त्रै नमः

काली सनाथयः सोयायुजयामि ॥ ॥
यंचवलिः ॥ वीं वाठक नायव लिंगुद्ररसा
दा ॥ अंजुयालायेव लिंगुद्ररसादा ॥
यां यागिद्ररसादा ॥ वीं वा मुषायवलिंगुद्र
रसादा ॥ गीं गवयमयवलिगुद्ररसा

॥ श्री सनं ॥ श्री सदाशिव महायुग्य
श्री सनायनमः ॥ ३ ॥ ॥ श्री ॥ महायुग्य
नानुका प्रत्नानन्द विग्रह । सर्वत्र तदि
तमात्मनः हिय प्रमथ नि ॥ श्री नयुर्थ
नमः ॥ प्रानुप्रतिष्ठायाय ॥ श्री दीक्षा ॥ ३ ॥

मूलं ॥ रगवतिद जि वकालिक रुद्र
गव २ रुद्रतिष्ठ २ रुद्र संनिगारव २
रुद्र संनिगारव २ मेमयुर्ज्ञा गृहात ॥
द्रु २ प्रवर्गु ० वं वं धनु मुद्राः या नि मु
द्रा ॥ ताल प्रय ॥ मूलः प्रत्नानन्द प्रत्नानन्द जि व

काली दये नमः॥ मूलः उद्योतः श्रीमहा
 काली दये साहा॥ मूलः रुद्रमात्रमनीयं
 श्रीमहा काली दये सखा॥ मूलः रुद्रमा
 नीयं श्रीमहा काली दये नमः॥ मूलः उद्यो
 तः श्रीमहा काली दये नमः॥ मूलः रुद्र

मन्त्रलयनं श्रीमहा काली दये नमः॥ मू
 लः रुद्रमङ्गलं श्रीमहा काली दये नमः॥
 मूलः रुद्रसिद्धं श्रीमहा काली दये नमः
 ॥ मूलमनुः प्रणमिष्ये निश्रीमहा काली द
 ये नमः॥ मूलमनुः रुद्रनेत्रं श्रीमहा का
 ली दये साहा॥ अष्टाक्षरं साहा॥ व्यानाय साहा

नायसाहा॥

समासाहा॥ ससा
॥ रुद्रमात्रमनीयं

लीद ये समर्पयामि ॥ नमः ॥ मूलः श्रीम
हा काली दवी नमः ॥ ३ ॥ मूलम
नुः ॥ दं एन नावमनीयं श्रीमहा काली द
वी सः ॥ ॥ श्री ॥ ति ॥ ॥ कौं कौं कौं रु गवति
श्रीमहा द वि ल का ली ॥ ति य स नम

॥ ३ ॥ वति ॥ यानि स्रज कन ॥ विं ड ॥ य नि
वा न स्रज या य ॥ मूलः रु गवति द वि ल का
ली द वि श्री व न ॥ ति य स्रज या मि ॥ कौं कौं
ली नम ॥ कौं का या ति ली नम ॥ कौं कौं ला ये
नम ॥ कौं कौं ला ये नम ॥ मूलः सौं ग स्रज

त्रिवात्राय धीया दुर्काय दुर्क्या मि ३॥ ॥ व
लिविय ॥ वां व द क ना थ य व लिं गृ द्र २
सा हा ॥ ऊं उ पु यो ला य व लिं गृ द्र २ सा हा ॥
यां या गि नी त्या व लिं गृ द्र २ सा हा ॥ वां वा
मु भु ये व लिं गृ द्र २ सा हा ॥ गर्ग व य न य

व लिं गृ द्र २ सा हा ॥ ड्रीं सर्व विद्यु कृ द्र ४ स
र्व रु न त्या द्र सा हा ३ ॥ ॥ द व या क व लि
स व न सा न न ॥ अ या या ल ख न या हा ती
स हा यः या पु या ग् लिं दृ क वा यः क स न य
उ य या य ॥ १०८ ॥ ड्रीं ड्रीं सा हा ॥ क ल ख का

यावयैके समर्थ जयाय ॥ ॐ दंड जंगू हा व
साहा ॥ मधुल दयकः कर्मा ॥ हागु याय
॥ त्रं जरा शुमला कारन या कं येन व नाव
नंत्य दं लिनं यन न स्त्री शुभ व नम
॥ कर्पु नं मधु माय सव य न न हि सं म

नृ वा मा डि यु कः वी डं न मा न व न डि यु न
ह न व धु रि क नं य ड पं तिः न र्मा ग द्या
निय द्या निव स्र ख दू ह ना ड ल सं ख व वा
वः स र्द्ध दं क्षा न धा न ध न र्चि न स र्द्ध सि
हिं ग नाना ॥ ऊ य ड य का लि का ल ता रि क

ASHA ARCHIVES

3500

तिंद्रितकालेदवेनमसाह॥द्रायाया
थंबतिविय॥

रुमामुक्ति॥अपराधसहस्रात्रिक्रिय
कंदविस्मया॥दत्तादमतिमानत्वा
क्रमस्ययवभञ्जनी॥४॥

लालीयत्रिवृत्तदशकालीयुक्कालीस
काचनवलकलकालीयैकितकुक्क
सीविसुल्लिगवलकालीकासकल्याक
काली॥अस्मन्निष्ठाचविधौगत्सर्व
विधियत्रियूर्लममु॥अष्टाद्वयतमम्॥

बालं बालं कं वासि ॥ ॥ श्री षांता मृगं न
स्वल्पित सगुनं गच्छेत् ॥ श्री षांता मृगं
न स्वहृदि मूलं गच्छेत् ॥ विन्द ॥ न
नमः श्री नाथाय ॥ नमः श्री सिद्धि
नाथाय ॥ नमः श्री काशी मनाथाय

य ॥ ॥ अधर्नं कास्य यः ॥ अर्जुन आत्मगतत्वा
साधया मिस्वाहा ॥ न विद्या न त्वं लभ
धया मिस्वाहा ॥ न निव न त्वं लभ ध
यामिस्वाहा ॥ न सर्वं त्वं लभ धया
मिस्वाहा ॥ न किं न त्वं लभ धर्न ॥

कनन॥दवयाकःवलिसःमाउसं॥खान
काकायःविकिर्षंकायावःदर्शनहृदावःव
लिसतं॥जुर्घायात्नखनमिरायिय॥या
पुयात्नखनमाउसाय॥विथंहमिमीय॥
कननःसंरुसःमधुतसःखानकाकाया

वक्तुय॥न्यासति कायद्रायायात्थं॥॥
कखानकावयूजा॥कीरुगवतिदडि व
कातिकयथा॥किरुडिगातिडिमसवु
सीद॥कयापुसथदावःवलिसंन॥दूद
दसाहा॥३॥यानिसुडादवथियावहु

दयसंयिया॥ क्रीदडि ल कालिक मम ॥
भुक्ताय रुद्र ३ रुद्र ३ लादाय दधुतक ॥ सदा
त्रमुडा लव लिख्यः यनु स वा द खान का
या व न तु दा वः ॥ नी ॥ न सु न यः निर्मा ल
न या व रू जा या य ॥ क्री रु ग व ति शी द डि ल

कालिक प्रवय ना द्यु खा र्थ खा हा ॥ निर्मा
ल्य रुद्र ॥ क्री निर्मा वा ति नै न म ४ ॥ ३ ॥ श्री या
गु का या व म ल ॥ ५ ॥ ध न का य ॥ क्रा या वा र्थ ॥
ह मित स गृ न र्थ ली ॥ रु द स मू त न र्थ ली या
य ॥ मू र्त्ति ॥ द डि ल कालिक न र्थ या मि ३ ॥



